

UP Board Class 12 Hindi General Code 302 ZH 2023

Time Allowed :3 Hours

Maximum Marks :80

Total Questions :18

सामान्य निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र में कुल 18 प्रश्न हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
2. इस प्रश्न-पत्र में दो खंड हैं – खंड अ और खंड ब।
3. खंड अ में उपप्रश्न सहित 45 लघुउत्तर प्रश्न पूछे गए हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए कुल 40 प्रश्नों के उत्तर लिखिए।
4. खंड ब में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं, अंतर्निर्देश विकल्प भी दिए गए हैं।
5. प्रश्नों के उत्तर दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए लिखिए।
6. यथासंभव दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

1 (क). 'आचारण की सभ्यता' निबंध के लेखक हैं :

- (A) रामचन्द्र शुक्ल
- (B) महावीर प्रसाद द्विवेदी
- (C) अध्यापक पूर्ण सिंह
- (D) सम्पूर्णानन्द

Correct Answer : (C) अध्यापक पूर्ण सिंह

Solution :

Step 1 : लेखक की पहचान.

'आचारण की सभ्यता' एक प्रसिद्ध निबंध है, जिसके लेखक अध्यापक पूर्ण सिंह हैं। उन्होंने भारतीय संस्कृति और नैतिक मूल्यों को विशेष रूप से अपने निबंधों में स्थान दिया है।

Step 2 : विकल्पों का विश्लेषण.

- (A) रामचन्द्र शुक्ल : इन्होंने कई निबंध लिखे, पर 'आचारण की सभ्यता' के लेखक नहीं हैं।
- (B) महावीर प्रसाद द्विवेदी : इन्होंने गद्य लेखन में योगदान दिया, पर यह निबंध उनका नहीं है।
- (C) अध्यापक पूर्ण सिंह : यह सही उत्तर है।
- (D) सम्पूर्णानन्द : ये भी प्रसिद्ध लेखक और समाजसेवी थे, पर इस निबंध के लेखक नहीं।

Step 3 : निष्कर्ष.

अतः सही उत्तर है (C) अध्यापक पूर्ण सिंह।

Quick Tip

लेखक की पहचान करने के लिए उनके प्रमुख निबंध और योगदान याद रखना उपयोगी होता है ।

1 (ख). 'हिन्दी नयी चाल में ढली' यह कथन किस लेखक का है ?

- (A) बालकृष्ण भट्ट
- (B) बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन'
- (C) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
- (D) महावीर प्रसाद द्विवेदी

Correct Answer : (C) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

Solution :

Step 1 : कथन की पहचान.

'हिन्दी नयी चाल में ढली' यह प्रसिद्ध कथन भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का है, जिन्हें हिन्दी साहित्य का "आधुनिक काल का जनक" कहा जाता है ।

Step 2 : विकल्पों का विश्लेषण.

- (A) बालकृष्ण भट्ट : इन्होंने भी हिन्दी पत्रकारिता और साहित्य में योगदान दिया, पर यह कथन उनका नहीं है ।
- (B) बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' : हास्य-व्यंग्य लेखन में प्रसिद्ध हैं, पर यह कथन उनसे संबंधित नहीं ।
- (C) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : यह सही उत्तर है । उन्होंने हिन्दी को नयी धारा और आधुनिक स्वरूप दिया ।
- (D) महावीर प्रसाद द्विवेदी : द्विवेदी युग के प्रवर्तक हैं, पर यह कथन उनका नहीं ।

Step 3 : निष्कर्ष.

अतः सही उत्तर है (C) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ।

Quick Tip

'हिन्दी नयी चाल में ढली' वाक्य भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के योगदान को दर्शाता है, जिन्होंने हिन्दी को आधुनिक साहित्यिक स्वरूप प्रदान किया ।

1 (ग). 'उसने कहा था' कहानी के लेखक हैं :

- (A) जयशंकर प्रसाद
- (B) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'

- (C) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(D) महावीर प्रसाद द्विवेदी

Correct Answer : (B) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'

Solution :

Step 1 : लेखक की पहचान.

'उसने कहा था' हिन्दी साहित्य की पहली आधुनिक कहानी मानी जाती है। इसके लेखक चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' हैं।

Step 2 : विकल्पों का विश्लेषण.

- (A) जयशंकर प्रसाद : इन्होंने भी कहानियाँ लिखीं, पर 'उसने कहा था' उनकी नहीं है।
- (B) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' : यह सही उत्तर है।
- (C) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : इन्होंने नाटक और गद्य लेखन किया, पर यह कहानी उनकी नहीं।
- (D) महावीर प्रसाद द्विवेदी : निबंध और गद्य लेखन में प्रसिद्ध हैं, पर कहानी उनके नहीं।

Step 3 : निष्कर्ष.

अतः सही उत्तर है (B) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'।

Quick Tip

'उसने कहा था' हिन्दी की प्रथम आधुनिक कहानी है।

1 (घ). 'पिंजरे की मैना' निबंध संग्रह के लेखक हैं :

- (A) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(B) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(C) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(D) रामचन्द्र शुक्ल

Correct Answer : (C) हजारी प्रसाद द्विवेदी

Solution :

Step 1 : लेखक की पहचान.

'पिंजरे की मैना' प्रसिद्ध निबंध संग्रह है, जिसके लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी हैं। उन्होंने निबंध, आलोचना और उपन्यास तीनों विधाओं में योगदान दिया।

Step 2: विकल्पों का विश्लेषण.

- (A) महावीर प्रसाद द्विवेदी : इन्होंने भी निबंध लिखे, पर यह संग्रह उनका नहीं ।
- (B) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक हैं, पर इस संग्रह के लेखक नहीं ।
- (C) हजारी प्रसाद द्विवेदी : यह सही उत्तर है ।
- (D) रामचन्द्र शुक्ल : आलोचना और निबंध लेखन में प्रसिद्ध, पर यह संग्रह उनका नहीं ।

Step 3: निष्कर्ष.

अतः सही उत्तर है (C) हजारी प्रसाद द्विवेदी ।

Quick Tip

हजारी प्रसाद द्विवेदी निबंध और आलोचना के लिए प्रसिद्ध हैं ।

1 (ड). 'कलम का सिपाही' के रचनाकार हैं :

- (A) प्रेमचन्द
- (B) अमृतराय
- (C) यशपाल
- (D) जैनेन्द्र

Correct Answer : (B) अमृतराय

Solution :

Step 1: लेखक की पहचान.

'कलम का सिपाही' प्रेमचन्द की जीवनी है, जिसे उनके पुत्र अमृतराय ने लिखा है ।

Step 2: विकल्पों का विश्लेषण.

- (A) प्रेमचन्द : यह उन पर आधारित रचना है, उन्होंने इसे नहीं लिखा ।
- (B) अमृतराय : यह सही उत्तर है, प्रेमचन्द के पुत्र और जीवनीकार ।
- (C) यशपाल : इन्होंने उपन्यास और कहानियाँ लिखीं, पर यह रचना उनकी नहीं ।
- (D) जैनेन्द्र : मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के लिए प्रसिद्ध हैं, पर यह रचना उनकी नहीं ।

Step 3: निष्कर्ष.

अतः सही उत्तर है (B) अमृतराय ।

Quick Tip

'कलम का सिपाही' प्रेमचन्द की जीवन-कथा है ।

2 (क). 'प्रिय प्रवास' के रचयिता हैं :

- (A) मैथिली शरण गुप्त
- (B) सियाराम शरण गुप्त
- (C) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
- (D) जयशंकर प्रसाद

Correct Answer : (C) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

Solution :

Step 1 : काव्य की पहचान.

'प्रिय प्रवास' एक महाकाव्य है जिसे अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने लिखा है। यह हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियों में से एक है।

Step 2 : विकल्पों का विश्लेषण.

- (A) मैथिली शरण गुप्त : राष्ट्रीय कवि माने जाते हैं, पर 'प्रिय प्रवास' उनकी रचना नहीं।
- (B) सियाराम शरण गुप्त : प्रसिद्ध कवि हैं, पर यह रचना उनकी नहीं।
- (C) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' : यह सही उत्तर है।
- (D) जयशंकर प्रसाद : छायावाद के प्रमुख कवि हैं, पर 'प्रिय प्रवास' के लेखक नहीं।

Step 3 : निष्कर्ष.

अतः सही उत्तर है (C) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'।

Quick Tip

'प्रिय प्रवास' हिन्दी साहित्य का एक महत्वपूर्ण महाकाव्य है।

2 (ख). निम्नलिखित में से 'छायावाद' के कवि हैं :

- (A) परमानंद दास
- (B) सूरदास
- (C) चतुर्भुज दास
- (D) मुकुटधर पांडेय

Correct Answer : (D) मुकुटधर पांडेय

Solution :

Step 1 : छायावाद की पहचान.

‘छायावाद’ हिन्दी साहित्य का एक महत्वपूर्ण काव्य आंदोलन है, जिसके कवियों में जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’, महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत और मुकुटधर पांडेय शामिल हैं ।

Step 2 : विकल्पों का विश्लेषण.

- (A) परमानंद दास : ये भक्तिकालीन कवि हैं ।
- (B) सूरदास : कृष्णभक्ति के प्रमुख कवि हैं, छायावाद से नहीं ।
- (C) चतुर्भुज दास : भक्तिकाल के कवि हैं ।
- (D) मुकुटधर पांडेय : इन्हें छायावाद का आरंभिक कवि माना जाता है ।

Step 3 : निष्कर्ष.

अतः सही उत्तर है (D) मुकुटधर पांडेय ।

Quick Tip

छायावाद हिन्दी काव्य का वह युग है जिसमें व्यक्तिगत भावनाओं और प्रकृति-चित्रण को महत्व मिला ।

2 (ग). निम्नलिखित में से कौन-सा कवि छायावाद युग का नहीं है ?

- (A) सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’
- (B) जयशंकर प्रसाद
- (C) महादेवी वर्मा
- (D) अज्ञेय

Correct Answer : (D) अज्ञेय

Solution :

Step 1 : छायावाद के प्रमुख कवि.

छायावाद के चार प्रमुख स्तंभ हैं – जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा ।

Step 2 : विकल्पों का विश्लेषण.

- (A) सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’ : छायावाद के प्रमुख कवि ।
- (B) जयशंकर प्रसाद : छायावाद के स्तंभ कवि ।
- (C) महादेवी वर्मा : ‘छायावाद की मीराबाई’ कहलाती हैं ।
- (D) अज्ञेय : यह प्रगतिवाद और प्रयोगवाद के कवि हैं, छायावाद से संबंधित नहीं ।

Step 3 : निष्कर्ष.

अतः सही उत्तर है (D) अज्ञेय ।

Quick Tip

छायावाद के चार स्तंभ हैं – प्रसाद, पंत, निराला और महादेवी ।

2 (घ). 'रश्मिरथी' किस कोटि की रचना है ?

- (A) महाकाव्य
- (B) खण्डकाव्य
- (C) मुक्तक
- (D) गद्यकाव्य

Correct Answer : (B) खण्डकाव्य

Solution :

Step 1 : रचना की पहचान.

'रश्मिरथी' रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित एक प्रसिद्ध खण्डकाव्य है, जिसमें महाभारत के पात्र कर्ण के जीवन का चित्रण है ।

Step 2 : विकल्पों का विश्लेषण.

- (A) महाकाव्य : 'रश्मिरथी' महाकाव्य नहीं, खण्डकाव्य है ।
- (B) खण्डकाव्य : यह सही उत्तर है ।
- (C) मुक्तक : 'रश्मिरथी' मुक्तक काव्य नहीं है ।
- (D) गद्यकाव्य : यह गद्यकाव्य नहीं है ।

Step 3 : निष्कर्ष.

अतः सही उत्तर है (B) खण्डकाव्य ।

Quick Tip

'रश्मिरथी' दिनकर की सर्वाधिक प्रसिद्ध कृतियों में से एक है और इसमें कर्ण को नायक रूप में प्रस्तुत किया गया है ।

2 (ङ). 'बादल को घिरते देखा है' रचना है :

- (A) मुक्तिबोध की
- (B) नागार्जुन की
- (C) त्रिलोचन की
- (D) अज्ञेय की

Correct Answer : (D) अज्ञेय की

Solution :

Step 1 : रचना की पहचान.

‘बादल को घिरते देखा है’ अज्ञेय की प्रसिद्ध कविता है, जो उनकी संवेदनशीलता और प्रकृति-चित्रण को दर्शाती है ।

Step 2 : विकल्पों का विश्लेषण.

- (A) मुक्तिबोध : प्रगतिवादी कवि हैं, पर यह रचना उनकी नहीं ।
- (B) नागार्जुन : लोकधर्मी कवि, पर यह रचना उनकी नहीं ।
- (C) त्रिलोचन : जनकवि, पर यह रचना उनकी नहीं ।
- (D) अज्ञेय : यह सही उत्तर है ।

Step 3 : निष्कर्ष.

अतः सही उत्तर है (D) अज्ञेय ।

Quick Tip

अज्ञेय प्रयोगवाद और नयी कविता आंदोलन के प्रमुख कवि हैं ।

3. दिये गये गद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

गद्यांश : पृथ्वी के विशाल प्रांगण में सब जातियों के लिए समान क्षेत्र है । समन्वय के मार्ग से भरपूर प्रगति और उन्नति करने का सबको एक जैसा अधिकार है । किसी जन को पीछे छोड़कर राष्ट्र आगे नहीं बढ़ सकता । अतएव राष्ट्र के प्रत्येक अंग की सुध हमें लेनी होगी । राष्ट्र के शरीर के एक अंग में यदि अंधकार और निर्बलता का निवास है, तो समय राष्ट्र का स्वास्थ्य उतने अंश में असमर्थ रहेगा ।

प्रश्न :

- (i) पाठ का शीर्षक एवं लेखक का नाम लिखिए ।
- (ii) राष्ट्र के प्रत्येक अंग की सुध हमें क्यों लेनी चाहिए ?
- (iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।
- (iv) राष्ट्र किन पीछे छूटकर आगे नहीं बढ़ सकता है ?
- (v) समन्वय के मार्ग से क्या प्राप्त हो सकता है ?

Answers :

- (i) पाठ का शीर्षक एवं लेखक : इस गद्यांश का शीर्षक है 'समन्वय' और लेखक हैं रामधारी सिंह 'दिनकर' ।
- (ii) राष्ट्र के प्रत्येक अंग की सुध क्यों लेनी चाहिए ? क्योंकि राष्ट्र तभी स्वस्थ और समर्थ हो सकता है जब उसके सभी अंग समान रूप से विकसित हों । यदि किसी भाग में अंधकार या दुर्बलता रहेगी, तो पूरा राष्ट्र प्रभावित होगा ।
- (iii) रेखांकित अंश की व्याख्या : "समन्वय के मार्ग से भरपूर प्रगति और उन्नति करने का सबको एक जैसा अधिकार है ।" इसका अर्थ है कि समाज के सभी वर्गों को समान अवसर मिलने चाहिए । किसी जाति, वर्ग या व्यक्ति के साथ भेदभाव किए बिना सबको उन्नति का अधिकार है ।
- (iv) राष्ट्र किनके पीछे छोड़कर आगे नहीं बढ़ सकता ? राष्ट्र अपने किसी भी अंग या वर्ग को पीछे छोड़कर आगे नहीं बढ़ सकता ।
- (v) समन्वय के मार्ग से क्या प्राप्त हो सकता है ? समन्वय के मार्ग से राष्ट्र को प्रगति, विकास और समान अधिकार की प्राप्ति होती है ।

Quick Tip

गद्यांश आधारित प्रश्न हल करने के लिए पहले पूरे अनुच्छेद को ध्यान से पढ़ना चाहिए और उत्तर सीधे पाद्यांश से जोड़कर लिखना चाहिए ।

OR

3. दिये गये गद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

गद्यांश : कहते हैं दुनिया बड़ी भुलझुड़ है । केवल उतना ही याद रखती है, जितने से उसका स्वार्थ साधता है । बाकियों को फेंककर आगे बढ़ जाती है । शायद अशोक से उसका स्वार्थ नहीं सधा । क्यों उसे वह याद रखती ? सारा संसार स्वार्थ का अखाड़ा ही तो है ।

प्रश्न :

- (i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए ।
- (ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।
- (iii) अशोक को विस्मृत करने का आधार किसे माना गया है ?
- (iv) लेखक ने दुनिया का किस तरह का व्यवहार बताया है ?
- (v) स्वार्थ का अखाड़ा किसे कहा गया है ?

Answers :

(i) पाठ और लेखक का नाम : यह गद्यांश 'अशोक के फूल' पाठ से लिया गया है और इसके लेखक ज-यशंकर प्रसाद हैं ।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या : "केवल उतना ही याद रखती है, जितने से उसका स्वार्थ साधता है । बाकियों को फेंककर आगे बढ़ जाती है ।" इसका अर्थ है कि संसार केवल उन्हीं बातों और व्यक्तियों को याद रखता है, जिनसे उसे लाभ या स्वार्थ सिद्ध होता है । बाकी सबको भुला देता है ।

(iii) अशोक को विस्मृत करने का आधार : लेखक के अनुसार, संसार ने अशोक को इसलिए भुला दिया क्योंकि उससे उसका स्वार्थ पूरा नहीं हुआ ।

(iv) लेखक ने दुनिया का व्यवहार : लेखक ने दुनिया को स्वार्थी बताया है, जो केवल अपने लाभ के लिए लोगों और घटनाओं को याद रखती है ।

(v) स्वार्थ का अखाड़ा : लेखक ने पूरे संसार को स्वार्थ का अखाड़ा कहा है ।

Quick Tip

गद्यांश आधारित प्रश्न हल करते समय उत्तर सीधे पाठ से जुड़ा होना चाहिए और संक्षिप्त व स्पष्ट होना चाहिए ।

4. दिये गये पद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

पद्यांश : जलधि के फूटे कितने उत्स
दीप, कच्छप डूबें – उतराय ;
किन्तु वह खड़ी रहे दृढ़ मूर्ति
अभ्युदय का कर रही उपाय ।

शक्ति के विद्युत्कण, जो व्यस्त
विकल बिखरे हैं, हो निरुपाय ;
समन्वय उसका कर समस्त
विजयीनी मानवता हो जाय ।

प्रश्न :

- उपर्युक्त पद्यांश के कवि और कविता का नाम लिखिए ।
- रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।
- दृढ़ मूर्ति से आशय किसकी मूर्ति से है ?
- 'उत्स' और 'अभ्युदय' शब्दों के अर्थ लिखिए ।
- दीप – कच्छप में कौन-सा अलंकार है ?

Answers :

(i) कवि और कविता का नाम : यह पद्यांश रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता 'समन्वय' से लिया गया है ।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या : "समन्वय उसका करे समस्त" का अर्थ है कि समाज और मानवता में व्याप्त बिखराव और असंतुलन को केवल समन्वय ही एक सूत्र में बाँध सकता है और एकता स्थापित कर सकता है ।

(iii) दृढ़ मूर्ति से आशय : यहाँ दृढ़ मूर्ति से आशय अडिग और अटल मानवता से है, जो विपरीत परिस्थितियों में भी खड़ी रहती है ।

(iv) शब्दार्थ : - 'उत्स' = तरंग, लहर, जोश
- 'अभ्युदय' = उत्थान, उन्नति, प्रगति

(v) अलंकार : 'दीप - कच्छप' में उपमा अलंकार है ।

Quick Tip

पद्यांश आधारित प्रश्नों में सबसे पहले कविता और कवि का नाम पहचानना ज़रूरी होता है, फिर शब्दार्थ और अलंकार को स्पष्ट लिखना चाहिए ।

OR

4. दिये गये पद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

पद्यांश : तुम मांसहीन, तुम रक्तहीन
हे अस्थिशेष, हे अस्तिहीन,
तुम शुद्ध बुद्ध आत्मा केवल,
हे चिरपुराण ! हे चिर नवीन ।

तुम पूर्ण इकाई जीवन की,
जिसमें असार भव - शून्य लीन,
आधार अमर, होगी जिस पर
भावी की संस्कृति समसीन ।

प्रश्न :

- (i) उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक और कवि का नाम लिखिए ।
- (ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।
- (iii) कौन हड्डियों का ढाँचा मात्र प्रतीत होते हैं ?
- (iv) गाँधीजी को कवि ने चिरपुराण तथा चिर नवीन क्यों कहा है ?
- (v) गाँधीजी के आदर्शों पर भविष्य में किसे खड़ा होना पड़ेगा ?

Answers :

(i) शीर्षक और कवि का नाम : यह पद्यांश 'गाँधी और नेहरू' कविता से लिया गया है और इसके कवि हैं रामधारी सिंह 'दिनकर' ।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या : "आधार अमर, होगी जिस पर" का आशय है कि गाँधीजी के विचार और आदर्श अमर हैं । इन्हीं के आधार पर भावी संस्कृति और समाज की नींव डाली जाएगी ।

(iii) हड्डियों का ढाँचा मात्र : गाँधीजी अपने शरीर से दुर्बल और अस्थिहीन प्रतीत होते थे, पर उनकी आत्मा और विचार अत्यंत शक्तिशाली थे ।

(iv) गाँधीजी को चिरपुराण तथा चिर नवीन क्यों कहा ? कवि ने गाँधीजी को चिरपुराण इसलिए कहा क्योंकि उनके विचार भारतीय संस्कृति की प्राचीन परंपराओं से जुड़े थे, और चिर नवीन इसलिए कहा क्योंकि उनके विचार आज भी प्रासंगिक और नये हैं ।

(v) गाँधीजी के आदर्शों पर भविष्य : भविष्य में संपूर्ण मानवता को गाँधीजी के आदर्शों पर खड़ा होना पड़ेगा ।

Quick Tip

गाँधीजी के आदर्श समय से परे हैं, इसलिए कवि ने उन्हें 'चिरपुराण' और 'चिर नवीन' दोनों कहा ।

5 (क). निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए : (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

- i) वासुदेवशरण अग्रवाल
- ii) डॉ॰ हजारीप्रसाद द्विवेदी
- iii) डॉ॰ ए॰ पी॰ जे॰ अब्दुल कलाम

Solutions :

(i) वासुदेवशरण अग्रवाल

साहित्यिक परिचय : वासुदेवशरण अग्रवाल हिन्दी साहित्य और भारतीय संस्कृति के गहन अध्येता थे । उन्होंने संस्कृति, पुरातत्व, साहित्य और समाज पर गहन अध्ययन कर लिखा । उनकी भाषा में शास्त्रीय गंभीरता और शोधपरक दृष्टि दिखाई देती है । प्रमुख रचनाएँ : 'भारतीय संस्कृति', 'संस्कृति का स्वरूप', 'भारत का सांस्कृतिक इतिहास' । इन कृतियों में भारतीय परंपरा, कला और संस्कृति का गहन विश्लेषण मिलता है ।

(ii) डॉ॰ हजारीप्रसाद द्विवेदी

साहित्यिक परिचय : डॉ॰ हजारीप्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य के महान आलोचक, निबंधकार और

उपन्यासकार थे। वे संस्कृत और हिन्दी के गहन विद्वान थे। उनकी भाषा में गंभीरता, व्याख्यात्मक शैली और सहजता का अद्भुत मेल मिलता है। प्रमुख रचनाएँ: निबंध: 'आलोचना की परंपरा', 'कबीर'। उपन्यास: 'अनामदास का पोथा', 'पुनर्नवा', 'बाणभट्ट की आत्मकथा'। अन्य: 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', 'नाट्यशास्त्र पर व्याख्यान'।

(iii) डॉ॰ ए॰ पी॰ जे॰ अब्दुल कलाम

साहित्यिक परिचय: डॉ॰ ए॰ पी॰ जे॰ अब्दुल कलाम भारत के पूर्व राष्ट्रपति और महान वैज्ञानिक थे, जिन्हें 'मिसाइल मैन' कहा जाता है। वे केवल वैज्ञानिक ही नहीं बल्कि प्रेरक लेखक भी थे। उनकी रचनाओं में युवाओं को सपने देखने और उन्हें पूरा करने की प्रेरणा मिलती है। प्रमुख रचनाएँ: 'Wings of Fire' (आत्मकथा), 'Ignited Minds', 'India 2020', 'My Journey'। इन कृतियों में विज्ञान, शिक्षा और राष्ट्र निर्माण की गहन दृष्टि मिलती है।

Quick Tip

लेखक परिचय लिखते समय उनके जीवन, साहित्यिक योगदान और प्रमुख कृतियों का संतुलित और संक्षिप्त विवरण अवश्य दें।

5 (ख). निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख कृतियों पर प्रकाश डालिए: (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

- अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
- जयशंकर प्रसाद
- सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

Solutions :

(i) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

Step 1: जीवन परिचय.

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' आधुनिक हिन्दी कविता के प्रथम चरण के प्रमुख कवि थे। वे खड़ी बोली को काव्य भाषा बनाने में अग्रणी रहे।

Step 2: साहित्यिक योगदान.

उन्होंने काव्य में राष्ट्रीयता, भक्ति और जीवन की गंभीरता को प्रस्तुत किया। उनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ होने पर भी सरल और प्रभावशाली है।

Step 3: प्रमुख कृतियाँ.

'प्रिय प्रवास', 'पुष्पांजलि', 'वैदही वनवास', 'चन्द्रकला'।

Step 4 : निष्कर्ष.

‘हरिऔध’ हिन्दी कविता के आरंभिक दौर में खड़ी बोली को प्रतिष्ठा दिलाने वाले कवि के रूप में स्मरणीय हैं ।

(ii) जयशंकर प्रसाद**Step 1 : जीवन परिचय.**

जयशंकर प्रसाद छायावाद के चार स्तंभों में से एक थे । वे कवि, नाटककार, कहानीकार और निबंधकार सभी रूपों में सफल रहे ।

Step 2 : साहित्यिक योगदान.

उनकी कविता में भावुकता, प्रकृति-चित्रण, इतिहास-प्रेम और दर्शन का सुंदर समन्वय मिलता है । उन्होंने हिन्दी नाटक और कहानी विधा को नई ऊँचाइयाँ दीं ।

Step 3 : प्रमुख कृतियाँ.

काव्य : ‘कामायनी’, ‘आँसू’, ‘झरना’ । नाटक : ‘चंद्रगुप्त’, ‘स्कंदगुप्त’, ‘ध्रुवस्वामिनी’ । कहानी-संग्रह : ‘इंद्रजाल’, ‘प्रेमपथिक’ ।

Step 4 : निष्कर्ष.

प्रसाद जी का योगदान हिन्दी साहित्य को एक नये युग की ओर ले जाने में अत्यंत महत्वपूर्ण है ।

(iii) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन ‘अज्ञेय’**Step 1 : जीवन परिचय.**

‘अज्ञेय’ आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवि, उपन्यासकार, आलोचक और निबंधकार थे । वे प्रयोगवाद और नयी कविता आंदोलन के प्रवर्तक थे ।

Step 2 : साहित्यिक योगदान.

उनकी रचनाओं में स्वतंत्रता, आत्मानुभूति और आधुनिक जीवन की जटिलताओं का चित्रण मिलता है । उनकी भाषा गहन, सूक्ष्म और कलात्मक है ।

Step 3 : प्रमुख कृतियाँ.

काव्य : ‘हरी घास पर क्षणभर’, ‘असाध्य वीणा’ । उपन्यास : ‘शेखर : एक जीवनी’ । कहानी-संग्रह : ‘विपथगा’ ।

Step 4 : निष्कर्ष.

‘अज्ञेय’ आधुनिक हिन्दी कविता के प्रतिनिधि कवि थे, जिन्होंने साहित्य को नये प्रयोग और नवीन दृष्टि दी ।

Quick Tip

कवि परिचय में सबसे पहले जीवन-परिचय, फिर साहित्यिक योगदान और अंत में प्रमुख कृतियाँ लिखने से उत्तर संतुलित और प्रभावी बनता है ।

6 (i). 'पंचलाइट' कहानी का सारांश लिखिए ।

Solution :

Step 1 : भूमिका.

'पंचलाइट' फणीश्वरनाथ 'रेणु' की प्रसिद्ध कहानी है, जो गाँव के सामूहिक जीवन और आधुनिक साधनों के प्रति आकर्षण को दिखाती है ।

Step 2 : कथा-सार.

कहानी में गाँव के लोग पहली बार 'पंचलाइट' (लालटेन) लेकर आते हैं, लेकिन उसे जलाना किसी को नहीं आता । भीखर, जिसे गाँव ने तिरस्कृत कर रखा है, उस लालटेन को जलाना जानता है । अंततः वही पंचलाइट जलाता है और सबके सामने उसकी उपयोगिता सिद्ध होती है ।

Step 3 : निष्कर्ष.

कहानी यह संदेश देती है कि समाज में हर व्यक्ति की अपनी उपयोगिता होती है, और हीन समझे गए लोग भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं ।

Quick Tip

सारांश लिखते समय केवल मुख्य कथा को संक्षिप्त और क्रमबद्ध रूप में लिखें ।

or

6 (ii). 'ध्रुवतारा' कहानी का सारांश लिखिए ।

Solution :

Step 1 : भूमिका.

'ध्रुवतारा' यशपाल की प्रसिद्ध कहानी है जिसमें स्वतंत्रता आंदोलन की भावना और आदर्शों के प्रति निष्ठा दिखाई देती है ।

Step 2 : कथा-सार.

कहानी का नायक जेल में है और अपने साथियों के साथ कष्ट सहते हुए भी अपने विचारों और आदर्शों पर अडिग रहता है । 'ध्रुवतारा' यहाँ स्थिरता और अटल विश्वास का प्रतीक है ।

Step 3 : निष्कर्ष.

यह कहानी बताती है कि जीवन में संघर्ष चाहे कितना भी कठिन क्यों न हो, सच्चे आदर्शों पर अडिग रहना ही वास्तविक सफलता है ।

Quick Tip

‘ध्रुवतारा’ आदर्शों और त्याग का प्रतीक है—इसे याद रखना सारांश लिखने में मदद करेगा ।

OR

6 (iii). ‘बहादुर’ कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए ।

Solution :

Step 1 : भूमिका.

‘बहादुर’ प्रेमचन्द की मार्मिक कहानी है जिसमें मानवता और स्वामी-भक्ति का चित्रण है ।

Step 2 : उद्देश्य.

कहानी का मुख्य उद्देश्य यह बताना है कि स्वामी-नौकर का संबंध केवल शोषण का नहीं होना चाहिए, बल्कि उसमें आत्मीयता और विश्वास होना आवश्यक है । बहादुर कुत्ते के माध्यम से प्रेमचन्द निष्ठा, त्याग और सच्चे संबंधों का महत्व दिखाते हैं ।

Step 3 : निष्कर्ष.

कहानी यह संदेश देती है कि सच्चा प्रेम और निष्ठा केवल मनुष्य-मनुष्य में ही नहीं, बल्कि मनुष्य और पशु के बीच भी हो सकती है ।

Quick Tip

उद्देश्य लिखते समय हमेशा कहानी के मूल संदेश को संक्षिप्त और स्पष्ट रूप में लिखें ।

7. स्वपठित खण्डकाव्य के आधार पर किसी एक खण्ड के एक प्रश्न का उत्तर दीजिए (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

i) ‘मुक्तित्रय’ खण्डकाव्य के आधार पर गाँधीजी का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

i) ‘मुक्तित्रय’ खण्डकाव्य की कथावस्तु लिखिए ।

Solutions :

(i) गाँधीजी का योगदान – ‘मुक्तित्रय’ के आधार पर

Step 1 : भूमिका.

‘मुक्तित्रय’ रामधारी सिंह ‘दिनकर’ द्वारा रचित खण्डकाव्य है जिसमें भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के

तीन महान नेताओं—महात्मा गाँधी, सुभाषचंद्र बोस और जवाहरलाल नेहरू—के योगदान को चित्रित किया गया है।

Step 2 : गाँधीजी का योगदान.

गाँधीजी ने सत्याग्रह, असहयोग और अहिंसा के बल पर अंग्रेजी शासन को चुनौती दी। उन्होंने जन-जागरण किया और गरीब से गरीब व्यक्ति को स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ा। उनके नेतृत्व में आंदोलन जनांदोलन बन गया।

Step 3 : निष्कर्ष.

दिनकर ने गाँधीजी को नैतिक शक्ति का प्रतीक माना है, जिन्होंने भारत की आत्मा को स्वतंत्रता की ज्योति से प्रज्वलित किया।

अथवा

(i) 'मुक्तित्रय' खण्डकाव्य की कथावस्तु

Step 1 : भूमिका.

'मुक्तित्रय' में कवि दिनकर ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम के तीन महानायक—गाँधीजी, नेहरू और सुभाषचंद्र बोस—का जीवन-चित्रण किया है।

Step 2 : कथावस्तु.

इस खण्डकाव्य में गाँधीजी के सत्याग्रह और अहिंसा, नेहरू की आधुनिक दृष्टि और सुभाषचंद्र बोस की सैन्य वीरता का वर्णन है। यह तीनों भारत की स्वतंत्रता के 'त्रिमूर्ति' के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं।

Step 3 : निष्कर्ष.

'मुक्तित्रय' भारत के स्वतंत्रता संग्राम की एक काव्यात्मक झांकी है, जो तीन महान नेताओं के योगदान को अमर बनाती है।

Quick Tip

खण्डकाव्य आधारित प्रश्न में पहले भूमिका, फिर मुख्य कथ्य और अंत में निष्कर्ष लिखना उत्तर को संपूर्ण बनाता है।

7. (ii) 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य का कथानक अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

(ii) 'सत्य की जीत' के आधार पर धृतराष्ट्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

Solutions :

(ii) 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य का कथानक

Step 1 : भूमिका.

‘सत्य की जीत’ रामधारी सिंह ‘दिनकर’ द्वारा रचित खण्डकाव्य है। इसमें महाभारत के प्रसंग को आधार बनाकर सत्य और धर्म की विजय का चित्रण किया गया है।

Step 2 : कथानक.

इस खण्डकाव्य में पांडवों और कौरवों के संघर्ष की पृष्ठभूमि में यह संदेश दिया गया है कि अन्याय और अधर्म चाहे कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, अंततः उसकी पराजय निश्चित है। धर्म और सत्य की रक्षा करने वाले ही अंतिम विजय प्राप्त करते हैं।

Step 3 : निष्कर्ष.

काव्य का मुख्य कथानक यह है कि असत्य और अधर्म का अंत होता है, और सत्य की ही सदैव विजय होती है।

अथवा

(ii) धृतराष्ट्र का चरित्र-चित्रण (‘सत्य की जीत’ के आधार पर)

Step 1 : भूमिका.

धृतराष्ट्र महाभारत का एक महत्वपूर्ण पात्र है, जिसकी त्रुटियों और कमजोरियों ने महायुद्ध को जन्म दिया। दिनकर ने ‘सत्य की जीत’ में उसके चरित्र का चित्रण गहनता से किया है।

Step 2 : स्वभाव और गुण.

धृतराष्ट्र जन्मांध था। वह मोहग्रस्त और पुत्रमोह से ग्रसित राजा था। वह जानते हुए भी कि दुर्योधन अधर्म के मार्ग पर चल रहा है, उसे रोक न सका। उसकी निर्बलता ही उसके चरित्र की सबसे बड़ी कमजोरी है।

Step 3 : दोष.

धृतराष्ट्र में निर्णय क्षमता और न्यायप्रियता का अभाव था। वह धर्म और सत्य को जानते हुए भी अपने पुत्रों के प्रति अंधे प्रेम के कारण अधर्म का साथ देता रहा।

Step 4 : निष्कर्ष.

धृतराष्ट्र का चरित्र यह सिखाता है कि राजा को न्याय और धर्म का पालन करना चाहिए, अन्यथा उसका दुर्बल चरित्र पूरे राष्ट्र को विनाश की ओर ले जाता है।

Quick Tip

चरित्र-चित्रण लिखते समय पहले परिचय, फिर गुण-दोष और अंत में निष्कर्ष अवश्य लिखें।

7 (iii). ‘रश्मिरथी’ खण्डकाव्य का कथानक लिखिए।

अथवा

‘रश्मिरथी’ के नायक कर्ण का चरित्र-चित्रण कीजिए।

Solutions :

(iii) 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य का कथानक

Step 1 : भूमिका.

'रश्मिरथी' रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित एक प्रसिद्ध खण्डकाव्य है। इसमें महाभारत के महान नायक कर्ण को केंद्र में रखा गया है।

Step 2 : कथानक.

इस खण्डकाव्य में कर्ण के जन्म, पालन-पोषण, दुर्योधन से मित्रता, कर्ण की उदारता, दानवीरता और अंततः महाभारत युद्ध में उसकी वीरगति का वर्णन है। कवि ने कर्ण के जीवन को संघर्ष, दानशीलता और मानवता का प्रतीक बताया है।

Step 3 : निष्कर्ष.

यह खण्डकाव्य केवल महाभारत का प्रसंग न होकर, कर्ण के माध्यम से समाज के उपेक्षित और प्रति-भाशाली व्यक्तियों की करुण गाथा भी है।

अथवा

(iii) कर्ण का चरित्र-चित्रण ('रश्मिरथी' के आधार पर)

Step 1 : भूमिका.

कर्ण महाभारत का एक महान नायक है। दिनकर ने 'रश्मिरथी' में उसके चरित्र को अत्यंत संवेदनशील और मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया है।

Step 2 : गुण.

कर्ण दानवीर, शूरी और दूरदृष्टिवादी था। वह सदैव दीन-दुखियों की सहायता करता था। उसकी मित्रता दुर्योधन से अटूट थी और उसने हर परिस्थिति में मित्र-धर्म निभाया।

Step 3 : दोष.

कर्ण का सबसे बड़ा दोष यह था कि वह अधर्म के पक्ष (दुर्योधन) में खड़ा रहा। उसके भीतर आत्मग्लानि भी थी क्योंकि वह अपने वास्तविक जन्म और पहचान को लेकर पीड़ा अनुभव करता था।

Step 4 : निष्कर्ष.

कर्ण का चरित्र करुणा और वीरता से भरा हुआ है। वह अन्याय के पक्ष में खड़ा होने के बावजूद साहित्य में दानवीर और महान योद्धा के रूप में अमर हो गया।

Quick Tip

कथानक लिखते समय घटनाओं को क्रमबद्ध लिखें, और चरित्र-चित्रण में गुण-दोष दोनों का उल्लेख कर निष्कर्ष दें।

7 (iv). “आलोक-वृत्त खण्डकाव्य में सत्य-अहिंसा का सुन्दर समन्वय है ।” इस कथन की व्याख्या की-जिए ।

अथवा

‘आलोक-वृत्त’ खण्डकाव्य का नायक कौन है ? उसकी चारित्रिक विशेषताएँ बताइए ।

Solutions :

(iv) कथन की व्याख्या – “सत्य-अहिंसा का सुन्दर समन्वय”

Step 1 : भूमिका.

‘आलोक-वृत्त’ रामधारी सिंह ‘दिनकर’ का प्रसिद्ध खण्डकाव्य है । इसमें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की मूल आत्मा—सत्य और अहिंसा—को चित्रित किया गया है ।

Step 2 : व्याख्या.

कवि ने दिखाया है कि महात्मा गाँधी ने सत्य और अहिंसा को संघर्ष का आधार बनाकर अंग्रेजों की शक्ति को पराजित किया । सत्य में नैतिक बल है और अहिंसा में करुणा और मानवता का संदेश । इन दोनों का मेल ही भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की सबसे बड़ी शक्ति थी ।

Step 3 : निष्कर्ष.

यह कथन इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि जब सत्य और अहिंसा का संगम होता है तो समाज और राष्ट्र को वास्तविक विजय प्राप्त होती है ।

अथवा

(iv) नायक और उसकी चारित्रिक विशेषताएँ (‘आलोक-वृत्त’ के आधार पर)

Step 1 : नायक का नाम.

‘आलोक-वृत्त’ खण्डकाव्य का नायक महात्मा गाँधी हैं ।

Step 2 : विशेषताएँ.

- गाँधीजी सत्य और अहिंसा के उपासक थे । - उनका जीवन सादगी, करुणा और त्याग से भरा था ।
- उन्होंने अहिंसा को राजनीतिक संघर्ष का हथियार बनाया । - वे जन-जन को स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ने वाले अद्वितीय नेता थे ।

Step 3 : निष्कर्ष.

गाँधीजी को दिनकर ने उस प्रकाश-पुरुष के रूप में चित्रित किया है जिसने सत्य और अहिंसा के मार्ग से विश्व को नया दृष्टिकोण दिया ।

Quick Tip

खण्डकाव्य से संबंधित प्रश्नों में सबसे पहले नायक/विषय की पहचान करें, फिर गुण-दोष और अंत में निष्कर्ष अवश्य लिखें ।

7 (v). 'त्यागपथी' खण्डकाव्य की कथावस्तु लिखिए ।
अथवा
'त्यागपथी' के आधार पर हर्षवर्धन का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

Solutions :

(v) 'त्यागपथी' खण्डकाव्य की कथावस्तु

Step 1 : भूमिका.

'त्यागपथी' रामधारी सिंह 'दिनकर' का खण्डकाव्य है जिसमें सम्राट हर्षवर्धन के जीवन और उसके त्यागपूर्ण चरित्र का वर्णन है ।

Step 2 : कथानक.

इस खण्डकाव्य में हर्षवर्धन के राज्य संचालन, प्रजा के प्रति उसकी करुणा और मानवता, और उसके त्यागपूर्ण जीवन का चित्रण किया गया है । कवि ने दिखाया है कि हर्ष केवल भोग-विलास में नहीं, बल्कि धर्म और त्याग के मार्ग में विश्वास करता था ।

Step 3 : निष्कर्ष.

'त्यागपथी' की कथावस्तु हर्ष के जीवन के उस आदर्श पक्ष को सामने लाती है, जहाँ त्याग ही उसके जीवन का पथ बन जाता है ।

अथवा

(v) हर्षवर्धन का चरित्र-चित्रण ('त्यागपथी' के आधार पर)

Step 1 : भूमिका.

सम्राट हर्षवर्धन भारतीय इतिहास के महान शासकों में से एक थे । दिनकर ने 'त्यागपथी' में उनके चरित्र का काव्यात्मक चित्रण किया है ।

Step 2 : गुण.

- हर्ष त्यागी और धर्मनिष्ठ शासक थे । - वे प्रजा के हित के लिए सदैव तत्पर रहते थे । - उनका जीवन करुणा, उदारता और परोपकार से भरा था । - उन्होंने अपने व्यक्तिगत सुख का त्याग कर राष्ट्र और मानवता के कल्याण को प्राथमिकता दी ।

Step 3 : दोष.

हर्ष की सबसे बड़ी कमजोरी यह थी कि उनका अत्यधिक त्याग भाव उनकी व्यक्तिगत इच्छाओं को दबा देता था ।

Step 4 : निष्कर्ष.

हर्षवर्धन का चरित्र हमें यह शिक्षा देता है कि सच्चा शासक वही है जो त्याग, सेवा और धर्म के मार्ग पर चलता है ।

Quick Tip

चरित्र-चित्रण लिखते समय परिचय, गुण, दोष और निष्कर्ष का क्रम अवश्य बनाएँ ताकि उत्तर संतुलित लगे ।

7 (vi). 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य में दशरथ का चरित्र-चित्रण कीजिए ।
अथवा
'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य की कथावस्तु पर विचार कीजिए ।

Solutions :

(vi) दशरथ का चरित्र-चित्रण ('श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के आधार पर)

Step 1 : भूमिका.

'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य में राम के पिता दशरथ का चरित्र अत्यंत मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया गया है । उनका जीवन करुणा और पश्चाताप से भरा हुआ है ।

Step 2 : गुण.

दशरथ एक योग्य और धर्मनिष्ठ राजा थे । वे प्रजा के हित में सदैव तत्पर रहते थे । उनमें सहृदयता और करुणा का भाव था ।

Step 3 : दोष.

दशरथ का सबसे बड़ा दोष यह था कि उन्होंने अनजाने में श्रवणकुमार की हत्या कर दी । इस घटना ने उन्हें अपराधबोध और पीड़ा से भर दिया ।

Step 4 : निष्कर्ष.

दशरथ का चरित्र हमें यह सिखाता है कि राजा से हुई छोटी-सी भूल भी जीवन भर के पश्चाताप का कारण बन सकती है । वे करुणा और दुर्बलता के प्रतीक बनकर साहित्य में स्मरणीय हैं ।

अथवा

(vi) 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य की कथावस्तु पर विचार

Step 1 : भूमिका.

'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य में कवि ने पौराणिक कथा के माध्यम से माता-पिता की सेवा, भक्ति और जीवन-मूल्यों का चित्रण किया है ।

Step 2 : कथावस्तु.

श्रवणकुमार अपने नेत्रहीन माता-पिता को तीर्थयात्रा के लिए ले जाते हैं । जल भरने के समय राजा दशरथ द्वारा छोड़े गए बाण से उनकी मृत्यु हो जाती है । मरते समय श्रवण अपने माता-पिता की सेवा की चिंता करता है । उसके माता-पिता भी पुत्र वियोग से प्राण त्याग देते हैं ।

Step 3 : विचार.

यह कथावस्तु त्याग, सेवा और करुणा का अद्वितीय उदाहरण है। इसमें पुत्रधर्म, मातृ-पितृ भक्ति और मानवीय संवेदनाओं का सुंदर चित्रण है।

Step 4 : निष्कर्ष.

‘श्रवणकुमार’ खण्डकाव्य भारतीय संस्कृति के मूल्यों—पितृभक्ति और सेवा—को अमर बना देता है।

Quick Tip

कथावस्तु पर विचार लिखते समय भूमिका, घटनाओं का क्रम, उनका संदेश और निष्कर्ष अवश्य लिखें।

8 (क). दिये गये संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का समतुल्य हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

अथैषः शकुनिः सर्वेषां मध्यादाशयग्रहार्थं निकृत्यः अशाब्दयत। ततः एकः काकः उद्यातं दिङ्न्तं तावत् अस्य एतस्मिन् राज्याभिषेककाले एवं रूपं मुनिं, कृत्वधरं च कीरं भविष्यति ? अयमेन हि कृत्वधेन अवलक्षिताः। वयं तत्कलादौ प्रक्षिप्तास्तिलाः। इदं तत् तवैतद्धध्याम। ईश्वरो राजा ममयं न रोचते।

Solution (अनुवाद):

Step 1 : भूमिका.

यह गद्यांश महाभारत से लिया गया है जिसमें शकुनि की कुटिलता और उसकी चालबाजी का उल्लेख है।

Step 2 : अनुवाद.

तत्पश्चात् शकुनि ने सभी के बीच से अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए षडंत्रपूर्वक बोलना आरम्भ किया। तभी एक कौआ उड़ता हुआ दिखाई दिया। उसने कहा – “क्या इस राज्याभिषेक के अवसर पर यह सब उचित होगा ? यह राजा यदि राज्य करेगा तो हमारे लिए कल्याणकारी नहीं होगा। हम सब इसके द्वारा ठगे जाएंगे। हम तो पहले ही इसके अधीन होकर पीड़ित हैं। इसलिए यह राजा मुझे स्वीकार नहीं है।”

Step 3 : निष्कर्ष.

यह अंश दर्शाता है कि शकुनि ने सदैव छल और कुटिलता से कार्य करके राजनीति में असंतोष और विद्रोह को जन्म दिया।

Quick Tip

संस्कृत गद्यांश का अनुवाद करते समय पहले वाक्य का भाव समझें, फिर सरल और व्याकरण सम्मत हिन्दी में लिखें।

OR

8 (क). दिये गये संस्कृत गद्यांश का समतुल्य हिन्दी में अनुवाद कीजिए ।

बौद्धयुगे इमे सिद्धान्ताः वैयक्तिकजीवनस्य अभ्युदयानाय प्रयुक्ताः आसन् । परम् अद्य इमे सिद्धान्ताः राष्ट्राणां परस्पर मैत्री सहयोगकारणानि विश्वबन्धुत्वस्य विश्वशान्तेः च साधनानि सन्ति । राष्ट्रनायकस्य श्रीजवाहरलालनेहरूमहोदयस्य प्रधानमन्त्रित्वकाले चीनदेशेन सह भारतस्य मैत्री पञ्चशीलसिद्धान्ताधिष्ठिता एवा अभवत् ।

Solution (अनुवाद) :

Step 1 : भूमिका.

यह गद्यांश पञ्चशील सिद्धान्तों और भारत-चीन मैत्री से संबंधित है । इसमें बौद्धकालीन मूल्यों की प्रासंगिकता का उल्लेख है ।

Step 2 : अनुवाद.

बौद्ध युग में ये सिद्धान्त व्यक्ति के जीवन के उत्थान के लिए प्रयुक्त होते थे । परन्तु आज यही सिद्धान्त राष्ट्रों के बीच मैत्री और सहयोग के साधन हैं तथा विश्वबन्धुत्व और विश्वशांति के लिए उपयोगी हैं । जब श्री जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रधानमंत्री थे तब चीन के साथ भारत की मित्रता पञ्चशील सिद्धान्तों पर आधारित थी ।

Step 3 : निष्कर्ष.

यह अंश यह सिद्ध करता है कि प्राचीन मूल्य आज भी राष्ट्रों के संबंधों को दृढ़ और शांति-आधारित बनाने में सहायक हैं ।

Quick Tip

अनुवाद लिखते समय सबसे पहले संस्कृत वाक्यों का भाव समझें और फिर सरल एवं प्रवाहपूर्ण हिन्दी में प्रस्तुत करें ।

8 (ख). दिये गये पद्यांशों में से किसी एक का समतुल्य हिन्दी में अनुवाद कीजिए ।

परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्याक्षे प्रियवादिनम् । वर्जयेत् तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम् । ।

Solution (अनुवाद) :

Step 1 : भूमिका.

यह श्लोक मित्रता और व्यवहार की शुद्धता पर आधारित है । इसमें अच्छे और बुरे मित्र की पहचान कराई गई है ।

Step 2 : पद्यांश का भावार्थ.

जो व्यक्ति सामने मीठी-मीठी बातें करता है, लेकिन पीछे से हानि पहुँचाता है, ऐसे मित्र को त्याग देना

चाहिए। वह ऐसा ही है जैसे विष से भरा हुआ घड़ा, जिसके मुख पर अमृत रखा हो। बाहर से मीठा और भीतर से घातक।

Step 3: निष्कर्ष.

श्लोक का भाव यह है कि सच्चा मित्र वही है जो सामने और पीछे दोनों ही स्थितियों में हितैषी हो, जबकि कपटी मित्र से हमेशा दूर रहना चाहिए।

Quick Tip

अनुवाद करते समय पहले शब्दार्थ समझें, फिर उसका भावार्थ सरल हिन्दी में लिखें।

OR

8 (ख) (द्वितीय विकल्प). दिये गये पद्यांश का समतुल्य हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि। लोकोत्तराणां चेतांसि को न विजातुमर्हति।।

Solution (अनुवाद):

Step 1: भूमिका.

यह श्लोक महान व्यक्तियों के हृदय की विशेषताओं को स्पष्ट करता है। इसमें उनकी संवेदनशीलता और कठोरता दोनों का वर्णन है।

Step 2: पद्यांश का भावार्थ.

महान व्यक्तियों के हृदय वज्र से भी अधिक कठोर और फूल से भी अधिक कोमल होते हैं। परिस्थितियों के अनुसार उनमें कठोरता और कोमलता दोनों गुण दिखाई देते हैं।

Step 3: निष्कर्ष.

श्लोक का भाव यह है कि लोककल्याण के लिए महान व्यक्तियों का हृदय कभी कठोर निर्णय लेता है तो कभी अत्यंत कोमलता और करुणा से भर जाता है।

Quick Tip

भावार्थ लिखते समय यह ध्यान रखें कि श्लोक में निहित गुणों और संदेश को सरल भाषा में प्रस्तुत किया जाए।

9. निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए:

- (i) जले पर नमक छिड़कना
- (ii) आँख का तारा होना
- (iii) अपना उल्लू सीधा करना
- (iv) हवा से बातें करना

Solution :

(i) जले पर नमक छिड़कना

अर्थ : दुःख या कष्ट की अवस्था में और अधिक कष्ट पहुँचाना ।

वाक्य : परीक्षा में फेल होने पर मित्रों ने उसका मज़ाक उड़ाकर जले पर नमक छिड़क दिया ।

(ii) आँख का तारा होना

अर्थ : बहुत प्रिय होना ।

वाक्य : सीता अपने माता-पिता की आँख का तारा है ।

(iii) अपना उल्लू सीधा करना

अर्थ : अपना स्वार्थ सिद्ध करना ।

वाक्य : उसने सबकी मदद करने का दिखावा किया, पर वास्तव में अपना उल्लू सीधा कर रहा था ।

(iv) हवा से बातें करना

अर्थ : बहुत तेज़ दौड़ना ।

वाक्य : मोहन ने दौड़ प्रतियोगिता में हवा से बातें करके पहला स्थान प्राप्त किया ।

Quick Tip

मुहावरों का प्रयोग करते समय उनका सही अर्थ और प्रसंग अवश्य ध्यान में रखें, तभी वाक्य प्रभावशाली बनता है ।

10 (क). निम्नलिखित शब्दों के संधि-विच्छेद के सही विकल्प का चयन कीजिए :

(i) 'निस्संदेह' का सही संधि-विच्छेद है -

- (अ) नि : + सन्देह
- (ब) निस् + सन्देह
- (स) निस् + देह
- (द) निस्सन्दे + ह

Correct Answer : (अ) नि : + सन्देह

Solution :

Step 1 : शब्द का विश्लेषण.

'निस्संदेह' शब्द 'निः' उपसर्ग और 'सन्देह' से बना है ।

Step 2 : संधि की पहचान.

'निः' + 'सन्देह' में विसर्ग के बाद 'स' आने पर 'स' का द्वित्व हो जाता है ।

Step 3 : निष्कर्ष.

इस प्रकार 'निस्संदेह' = 'निः' + 'सन्देह' होता है ।

Quick Tip

विसर्ग + 'स' या 'श' के मेल में विसर्ग लुप्त होकर उस अक्षर का द्वित्व हो जाता है ।

(ii) 'इत्यादि' का सही संधि-विच्छेद है –

- (अ) इत् + आदि
- (ब) इति + आदि
- (स) इत्यम् + आदि
- (द) इत्याः + दि

Correct Answer : (ब) इति + आदि

Solution :

Step 1 : शब्द का विश्लेषण.

'इत्यादि' शब्द 'इति' और 'आदि' से बना है ।

Step 2 : संधि की पहचान.

'इति' + 'आदि' में 'इ' और 'आ' के मेल से 'या' का रूप बनता है ।

Step 3 : निष्कर्ष.

इस प्रकार 'इत्यादि' = 'इति' + 'आदि' होता है ।

Quick Tip

स्वर संधि में 'इ' + 'आ' के मेल से 'या' का रूप बनता है ।

(iii). 'स्वागतम्' का सही संधि-विच्छेद है -

- (अ) सु + आगतम्
- (ब) स्वा + गतम्
- (स) सु + अगतम्
- (द) सः + आगत

Correct Answer : (ब) स्वा + गतम्

Solution :

Step 1 : शब्द का विश्लेषण.

'स्वागतम्' शब्द दो शब्दों 'स्वा' और 'गत' से बना है ।

Step 2 : संधि की पहचान.

'स्वा' + 'गत' के मेल से 'स्वागतम्' बनता है । इसमें 'स्वा' का अर्थ है 'अपना' और 'गत' का अर्थ है 'आ-गमन' ।

Step 3 : निष्कर्ष.

इस प्रकार 'स्वागतम्' = 'स्वा' + 'गत' होता है, जिसका भावार्थ है - 'आपका आगमन मंगलमय हो' ।

Quick Tip

स्वागतम् शब्द का प्रयोग किसी का अभिनन्दन या स्वागत करने के लिए किया जाता है ।

10 (ख). दिये गये निम्नलिखित शब्दों की शुद्ध 'विभक्ति' और 'वचन' बताइये :

(i) 'आत्मनि' शब्द में विभक्ति और वचन

- (अ) सप्तमी विभक्ति, एकवचन
- (ब) तृतीया विभक्ति, बहुवचन
- (स) षष्ठी विभक्ति, बहुवचन
- (द) पञ्चमी विभक्ति, एकवचन

Correct Answer : (अ) सप्तमी विभक्ति, एकवचन

Solution :

Step 1 : शब्द का रूप.

'आत्मनि' शब्द 'आत्मन्' से बना है ।

Step 2 : विभक्ति पहचान.

'आत्मनि' रूप में 'नि' प्रत्यय लगा है जो सप्तमी एकवचन का चिन्ह है ।

Step 3 : निष्कर्ष.

अतः 'आत्मनि' = सप्तमी विभक्ति, एकवचन ।

Quick Tip

संस्कृत में सप्तमी विभक्ति स्थान या आधार सूचक होती है । जैसे – 'गृहे', 'नगरि' आदि ।

(ii) 'नाने' शब्द में विभक्ति और वचन हैं

(अ) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन

(ब) तृतीया विभक्ति, बहुवचन

(स) पञ्चमी विभक्ति, एकवचन

(द) षष्ठी विभक्ति, बहुवचन

Correct Answer : (ब) तृतीया विभक्ति, बहुवचन

Solution :

Step 1 : शब्द का रूप.

'नाने' शब्द 'नान' धातु से व्युत्पन्न हुआ है ।

Step 2 : विभक्ति पहचान.

'ए' प्रत्यय तृतीया बहुवचन का चिन्ह है । इसलिए 'नाने' तृतीया बहुवचन रूप है ।

Step 3 : निष्कर्ष.

अतः 'नाने' = तृतीया विभक्ति, बहुवचन ।

Quick Tip

संस्कृत में तृतीया विभक्ति का प्रयोग 'के साथ' अथवा 'द्वारा' के अर्थ में होता है ।

11 (क). निम्नलिखित शब्द-युग्मों का सही अर्थ चयन करके लिखिए :

(i) अविराम - अबिराम

- (अ) लगातार और रुचिकर
- (ब) बिना रोक के और सुन्दर
- (स) अनवरत और आकर्षक
- (द) सुन्दर और आकर्षक

Correct Answer : (स) अनवरत और आकर्षक

Solution :

Step 1 : अविराम का अर्थ.

'अविराम' का अर्थ है – बिना रुके, निरंतर, अनवरत ।

Step 2 : अबिराम का अर्थ.

'अबिराम' का अर्थ है – आकर्षक, मनोहर, रमणीय ।

Step 3 : निष्कर्ष.

अतः 'अविराम - अबिराम' का सही अर्थ है – अनवरत और आकर्षक ।

Quick Tip

शब्दों के पूर्व उपसर्ग (अ, नि, सु आदि) से उनके अर्थ में महत्वपूर्ण भिन्नता आ सकती है ।

(ii) विहंग - विहंगम्

- (अ) पक्षी और बालक
- (ब) पक्षी और तोता
- (स) पक्षी और आकाश
- (द) आकाश और पक्षी

Correct Answer : (स) पक्षी और आकाश

Solution :

Step 1 : विहंग का अर्थ.

'विहंग' का अर्थ है – पक्षी ।

Step 2: विहंगम् का अर्थ.

'विहंगम्' का अर्थ है – आकाश (जिसमें पक्षी उड़ते हैं) ।

Step 3: निष्कर्ष.

अतः 'विहंग - विहंगम्' का सही अर्थ है – पक्षी और आकाश ।

Quick Tip

संस्कृत में समान धातु से बने शब्दों के अर्थ में सूक्ष्म अंतर होता है, जैसे विहंग (पक्षी) और विहंगम् (आकाश) ।

11 (ख). निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो अर्थ लिखिए :

- (i) शिखा
- (ii) पूत
- (iii) पक्ष
- (iv) काण्ड

Solution :

(i) शिखा

- 1. मस्तक पर बालों का छोटा गुच्छा ।
- 2. लौ की अग्नि-जीभ या शिखर ।

(ii) पूत

- 1. पुत्र (बेटा) ।
- 2. पवित्र, शुद्ध ।

(iii) पक्ष

- 1. पंख या डैने ।
- 2. किसी विषय या विवाद का समर्थन ।

(iv) काण्ड

- 1. किसी ग्रन्थ या महाकाव्य का भाग ।
- 2. कोई विचित्र घटना या प्रसंग ।

Quick Tip

एक ही शब्द के अनेक अर्थ हो सकते हैं ; इसे बहुअर्थक शब्द कहते हैं । सही अर्थ का चयन वाक्य के सन्दर्भ से किया जाता है ।

11 (ग). निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक सही 'शब्द' का चयन करके लिखिए :

(i) रास्ता दिखाने वाला –

- (अ) दूरदर्शी
- (ब) समदर्शक
- (स) मार्गदर्शक
- (द) प्रियदर्शी

Correct Answer : (स) मार्गदर्शक

Solution :

Step 1 : वाक्यांश का अर्थ.

'रास्ता दिखाने वाला' का अर्थ है वह व्यक्ति जो दिशा बताता है या मार्ग दिखाता है ।

Step 2 : उपयुक्त शब्द का चयन.

इस अर्थ के लिए सबसे उपयुक्त शब्द है – 'मार्गदर्शक' ।

Step 3 : निष्कर्ष.

अतः 'रास्ता दिखाने वाला' = 'मार्गदर्शक' ।

Quick Tip

'मार्गदर्शक' शब्द का प्रयोग शिक्षक, नेता या गाइड के लिए भी किया जाता है ।

(ii) जिसका कोई अन्त न हो –

- (अ) असीम
- (ब) अनन्त
- (स) परम
- (द) विस्तृत

Correct Answer : (ब) अनन्त

Solution :

Step 1 : वाक्यांश का अर्थ.

'जिसका कोई अन्त न हो' का अर्थ है – जिसका कभी अंत न हो, जो शाश्वत हो ।

Step 2 : उपयुक्त शब्द का चयन.

इस अर्थ के लिए उपयुक्त शब्द है – 'अनन्त' ।

Step 3 : निष्कर्ष.

अतः 'जिसका कोई अन्त न हो' = 'अनन्त' ।

Quick Tip

'अनन्त' शब्द का प्रयोग ईश्वर, आकाश, समय और प्रेम जैसे शाश्वत विषयों के लिए किया जाता है ।

11 (घ). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

(i) श्याम और मोहन बात कर रहा है ।

शुद्ध वाक्य : श्याम और मोहन बात कर रहे हैं ।

(ii) प्रधानाचार्य जी ने हस्ताक्षर कर दिया ।

शुद्ध वाक्य : प्रधानाचार्य जी ने हस्ताक्षर कर दिए ।

(iii) मैं गृहकार्य कर लिया हूँ ।

शुद्ध वाक्य : मैंने गृहकार्य कर लिया है ।

(iv) चन्द्रमा आकाश में निकलता था ।

शुद्ध वाक्य : चन्द्रमा आकाश में निकला था ।

Solution :

Step 1 : वाक्य (i).

'श्याम और मोहन' बहुवचन हैं, इसलिए क्रिया भी बहुवचन होनी चाहिए । 'कर रहा है' की जगह 'कर रहे हैं' सही है ।

Step 2 : वाक्य (ii).

'प्रधानाचार्य जी' सम्मानसूचक बहुवचन हैं, इसलिए 'कर दिया' की जगह 'कर दिए' होगा ।

Step 3 : वाक्य (iii).

'मैं' के साथ क्रिया 'कर लिया हूँ' गलत है, सही रूप 'मैंने गृहकार्य कर लिया है' होगा ।

Step 4 : वाक्य (iv).

'निकलता था' आदत या बार-बार की क्रिया दर्शाता है, पर चन्द्रमा का निकलना एक बार की घटना है, इसलिए 'निकला था' सही है ।

Quick Tip

वाक्यों को शुद्ध करने के लिए कर्ता और क्रिया में संख्या तथा लिंग का सामंजस्य अवश्य देखना चाहिए ।

12 (क). 'शृंगार' रस अथवा 'वात्सल्य' रस का स्थायी भाव के साथ उदाहरण अथवा परिभाषा लिखिए ।

Correct Answer : शृंगार रस – रति भाव पर आधारित । वात्सल्य रस – माता-पिता और संतान के स्नेह पर आधारित ।

Solution :

Step 1 : शृंगार रस.

- स्थायी भाव : रति (प्रेम भाव) ।
- यह रस नायक और नायिका के प्रेम, शृंगारिक भावनाओं और सौंदर्य पर आधारित है ।
- उदाहरण : "काहे को ब्याही बिदेस, लाज लागि जाय ।" (विदा के समय नायिका का भाव)

Step 2 : वात्सल्य रस.

- स्थायी भाव : माता-पिता और संतान के बीच का स्नेह ।
- यह रस बालक की चेष्टाओं और माता-पिता के ममत्व से उत्पन्न होता है ।
- उदाहरण : यशोदा का श्रीकृष्ण को झूलाना ।

Step 3 : निष्कर्ष.

शृंगार रस जहाँ प्रेम का सौंदर्य है, वहीं वात्सल्य रस माता-पिता और संतान के स्नेह का चित्रण करता है ।

Quick Tip

रस का स्थायी भाव ही उसकी आत्मा होता है । बिना स्थायी भाव के रस की पहचान नहीं हो सकती ।

12 (ख). 'यमक' अलंकार अथवा 'रूपक' अलंकार का लक्षण और उदाहरण लिखिए ।

Correct Answer : यमक अलंकार – शब्द की पुनरावृत्ति से । रूपक अलंकार – उपमेय को उपमान रूप में दिखाना ।

Solution :

Step 1 : यमक अलंकार.

- लक्षण : जब एक ही शब्द की पुनरावृत्ति भिन्न-भिन्न अर्थों में होती है, वहाँ यमक अलंकार होता है ।
- उदाहरण : "राम राम सब कोई कहै, राम न चिन्है कोय ।"

Step 2 : रूपक अलंकार.

- लक्षण : जब उपमेय (जिसकी उपमा दी जा रही है) को सीधे उपमान (जिससे तुलना की जा रही है) मान लिया जाता है, वहाँ रूपक अलंकार होता है ।
- उदाहरण : "चन्द्र मुख तव, कमल नयन ।" (मुख को चन्द्र और नेत्रों को कमल कहा गया है)

Quick Tip

यमक अलंकार में शब्द-योजना पर बल होता है जबकि रूपक अलंकार में भाव और कल्पना पर ।

12 (ग). 'चौपाई' छन्द अथवा 'सोरठा' छन्द का मात्रा सहित लक्षण तथा उदाहरण लिखिए ।

Correct Answer : चौपाई छन्द – प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ । सोरठा छन्द – प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ (13 + 11) ।

Solution :

Step 1 : चौपाई छन्द.

- लक्षण : प्रत्येक पंक्ति (चरण) में 16 मात्राएँ होती हैं । यह छन्द प्रायः रामचरितमानस में प्रयुक्त हुआ है ।
- उदाहरण : "मंगल भवन अमंगल हारी । द्रवउ सो दसरथ अजिर बिहारी । ।"

Step 2 : सोरठा छन्द.

- लक्षण : इसमें प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं, जिनका क्रम (13 + 11) होता है ।
- उदाहरण : "बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर । पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर । ।"

Quick Tip

चौपाई छन्द की पहचान इसकी 16 मात्राओं से होती है, जबकि सोरठा छन्द 24 मात्राओं वाला होता है ।

13. (i) शिक्षा ऋण प्राप्त करने के लिए बैंक प्रबंधक को आवेदन पत्र लिखिए ।

Solution :

सेवा में,
प्रबंधक महोदय
स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
शाखा – लखनऊ

विषय : शिक्षा ऋण प्राप्त करने हेतु आवेदन पत्र ।

महोदय,
सविनय निवेदन है कि मैंने इस वर्ष लखनऊ विश्वविद्यालय में बी.टेक. पाठ्यक्रम में प्रवेश प्राप्त किया है । मेरी पारिवारिक आर्थिक स्थिति साधारण है । मेरे पिताजी की आय से उच्च शिक्षा का खर्च वहन करना कठिन है । अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि कृपया मुझे शिक्षा ऋण प्रदान करने की कृपा करें ताकि मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सकूँ ।

भवदीय
(हस्ताक्षर)
नाम – राम कुमार
दिनांक – 25 सितम्बर 2025

Quick Tip

आवेदन पत्र संक्षिप्त, स्पष्ट और विनम्र भाषा में लिखा जाना चाहिए ।

OR

13. (i) नगर में अतिक्रमण की समस्या के निवारण हेतु महापौर को पत्र लिखिए ।

Solution :

सेवा में,
माननीय महापौर महोदय
नगर निगम, लखनऊ

विषय : अतिक्रमण समस्या के निवारण हेतु निवेदन ।

महोदय,
सविनय निवेदन है कि हमारे नगर की मुख्य सड़कों और गलियों में अतिक्रमण की समस्या अत्यधिक बढ़ गई है । दुकानदारों ने सड़क पर ही सामान फैला दिया है, जिससे लोगों के आने-जाने में भारी कठिनाई होती है । आए दिन जाम की समस्या उत्पन्न होती है और दुर्घटनाओं की संभावना बनी रहती है । अतः आपसे विनम्र प्रार्थना है कि इस समस्या का शीघ्र समाधान कराकर नगरवासियों को राहत प्रदान करें ।

भवदीय
(हस्ताक्षर)
नाम – राम कुमार
दिनांक – 25 सितम्बर 2025

Quick Tip

शिकायत या निवेदन पत्र में समस्या को स्पष्ट रूप से लिखें और समाधान की अपेक्षा विनम्र भाषा में करें।

14. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर अपनी भाषा-शैली में निबंध लिखिए :

(i) पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता

Solution :

प्रस्तावना :

पर्यावरण मानव जीवन का आधार है। वायु, जल, मृदा, वृक्ष, पशु-पक्षी और प्राकृतिक संपदा ही हमारे जीवन को संभव बनाते हैं। किन्तु आज के युग में विकास की अंधी दौड़ ने पर्यावरण को अत्यंत हानि पहुँचाई है। इसी कारण पर्यावरण संरक्षण आज की सबसे बड़ी आवश्यकता बन गई है।

मुख्य भाग :

1. **प्रदूषण की समस्या :** औद्योगीकरण, मोटर वाहनों का धुआँ, प्लास्टिक का प्रयोग और रासायनिक अपशिष्टों ने वायु, जल और भूमि को प्रदूषित कर दिया है। 2. **वनों की कटाई :** वनों के अंधाधुंध कटान से जैव-विविधता नष्ट हो रही है और जलवायु असंतुलन बढ़ रहा है। 3. **जीव-जंतुओं का विलुप्त होना :** असंतुलन के कारण अनेक प्रजातियाँ लुप्त हो रही हैं। 4. **संरक्षण के उपाय :** वृक्षारोपण, नवीकरणीय ऊर्जा का प्रयोग, प्लास्टिक पर नियंत्रण और पर्यावरणीय कानूनों का पालन।

उपसंहार :

पर्यावरण संरक्षण केवल सरकार का ही नहीं, प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। यदि समय रहते हम जागरूक न हुए तो जीवन असंभव हो जाएगा।

Final Answer :

पर्यावरण संरक्षण मानव जीवन के अस्तित्व के लिए अनिवार्य है।

Quick Tip

निबंध लिखते समय हमेशा प्रस्तावना, मुख्य भाग और उपसंहार का ध्यान रखें।

(ii) महामारियों के सम्बन्ध में जागरूकता के उपाय

Solution :

प्रस्तावना :

महामारी मानव इतिहास में बार-बार आती रही है और करोड़ों लोगों के जीवन को प्रभावित करती रही है। कोविड-19 ने हमें यह सिखाया कि जागरूकता ही सबसे बड़ा बचाव है।

मुख्य भाग :

1. **स्वच्छता :** हाथ धोना, मास्क पहनना और साफ-सफाई रखना आवश्यक है। 2. **टीकाकरण :** समय पर वैक्सीन लगवाना। 3. **सामाजिक दूरी :** भीड़ से बचना और अनुशासन बनाए रखना। 4. **सरकारी दिशा-निर्देश :** नियमों का पालन करना और अफवाहों से बचना।

उपसंहार :

महामारी से बचाव का सबसे प्रभावी साधन जागरूकता है। जनता सतर्क रहे तो किसी भी महामारी का प्रभाव कम किया जा सकता है।

Final Answer :

महामारी से बचाव का मूलमंत्र है जागरूकता और अनुशासन।

Quick Tip

महामारियों पर निबंध लिखते समय कारण, प्रभाव और उपाय अवश्य लिखें।

(iii) मेरे प्रिय उपन्यासकार

Solution :

प्रस्तावना :

साहित्य समाज का दर्पण है। उसमें उपन्यास प्रमुख विधा है। मेरे प्रिय उपन्यासकार मुंशी प्रेमचंद हैं जिन्हें उपन्यास सम्राट कहा जाता है।

मुख्य भाग :

1. **विषय-वस्तु :** किसानों की समस्या, सामाजिक विषमता और मानवीय संवेदनाएँ। 2. **प्रमुख रचनाएँ :** "गोदान", "गबन", "रंगभूमि", "सेवासदन"। 3. **भाषा-शैली :** सरल, सहज और मार्मिक। 4. **विशेषता :** यथार्थ का चित्रण और समाज सुधार का संदेश।

उपसंहार :

प्रेमचंद के उपन्यास आज भी समाज को दर्पण दिखाते हैं और हमें प्रेरित करते हैं।

Final Answer :

प्रेमचंद मेरे प्रिय उपन्यासकार हैं।

Quick Tip

उपन्यासकार पर निबंध में जीवन, रचनाएँ और साहित्यिक योगदान शामिल करें।

(iv) भारतीय कृषकों की समस्या एवं समाधान

Solution :

प्रस्तावना :

भारत कृषि प्रधान देश है। यहाँ की अधिकांश जनता कृषि पर निर्भर है, परन्तु किसान आज भी अनेक समस्याओं से जूझ रहा है।

मुख्य भाग :

1. भूमि और तकनीक : छोटे खेत और आधुनिक साधनों का अभाव। 2. सिंचाई की कमी : वर्षा पर अत्यधिक निर्भरता। 3. आर्थिक संकट : कर्ज का बोझ और साहूकारों का शोषण। 4. समाधान : आधुनिक कृषि यंत्रों का प्रयोग, सिंचाई के साधनों का विकास, न्यूनतम समर्थन मूल्य और सहकारी संस्थाओं का सहयोग।

उपसंहार :

किसान को सशक्त और समृद्ध बनाना भारत की प्रगति की पहली शर्त है।

Final Answer :

किसानों की उन्नति ही भारत की उन्नति है।

Quick Tip

किसान सम्बन्धी निबंध में हमेशा समस्या और समाधान दोनों को लिखना चाहिए।

(v) विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्व

Solution :

प्रस्तावना :

विद्यार्थी जीवन शिक्षा प्राप्त करने का समय है। इस काल में अनुशासन सफलता की कुंजी है।

मुख्य भाग :

1. समय का पालन : अनुशासन से समय का सही उपयोग होता है। 2. अध्ययन में एकाग्रता : अनुशासन से मन एकाग्र होता है। 3. चरित्र निर्माण : अनुशासन से आत्म-नियंत्रण और कर्तव्य-निष्ठा आती है। 4. जीवन में सफलता : अनुशासन के बिना शिक्षा का उद्देश्य पूर्ण नहीं हो सकता।

उपसंहार :

विद्यार्थी जीवन में अनुशासन ही सफलता का मार्ग प्रशस्त करता है।

Final Answer :

अनुशासन विद्यार्थी जीवन की सफलता की कुंजी है ।

Quick Tip

विद्यार्थी जीवन पर निबंध में अनुशासन और चरित्र-निर्माण का अवश्य उल्लेख करें ।
